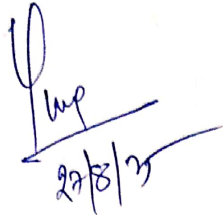
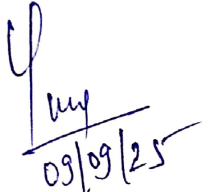


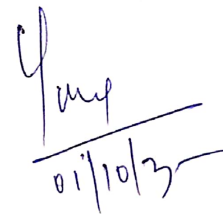
दिनांक

हुक्म या कार्यवाही या मय इनिशियल्स जज

नम्बर व तारीख  
अहकाम जो इस  
हुक्म की तालीम  
में जारी हुए

8/25 पत्रावली पेश हुई। वकील उमयपक्ष उपर  
पत्रावली वास्ते आदेश दि. 09/09/25  
को पेश हो।  
  
 29/8/25

9/25 पत्रावली पेश हुई। वकील उमयपक्ष उपर  
पत्रावली वास्ते आदेश दि. 01/10/25 को  
पेश हो।  
  
 09/09/25

10/25 पत्रावली पेश हुई। वकील उमयपक्ष उपर  
पत्रावली वास्ते आदेश दि. 13/10/25  
को पेश हो।  
  
 01/10/25

11/0/25 पत्रावली पेश हुई। वकील उमयपक्ष उपर  
बहल प्रोपत्र के परिपेक्ष्य से पत्रावली पर आपन  
रायत्व दिमाई एवं श्राप्य फी का अवलोकन किया गया।  
 उमयपक्ष इस तथ्य पर सहमत हैं कि मृतक परकीर  
पिता रामालीह के दो पुत्र - इमैलीह, परवतलीह, 02 पुत्रिके  
- लौहमवाई व हृष्णावाई एवं बेवा - हापुवाई हैं।  
बेवा हापुवाई कांत हो चुकी हैं। इस तथ्य परभी  
सहमत हैं कि परधीलीह की मृत्यु होने पर भय



पिता नामांक सं 450 दिनांक 20/05/2006 से जगदी  
 मारीलान इलेक्ट्रिक, परमारीलान, सोहनबाई, कुण्ठाबाई  
 एवं वेवा बापुबाई हिस्से 1/5-1/5 का सहकारिता  
 रूप में है। इसके बाद वेवा बापुबाई के पति  
 होने पर व्यय नामांतरण सं 474 दिनांक 20/11/2008  
 से बापुबाई की जगह चारी फा-पुत्रीया का  
 नाम रखा हुआ था। अतः स्पष्ट है कि वाडग्रल  
 आरामी से प्रत्येक वारिलान 1/4-1/4 भाग पर रखा  
 हुआ था जिसमें से प्रत्येक का 1/5 भाग ती  
 पिता परमारीलान से विरासत में और 1/20 भाग मा  
 बापुबाई से विरासत में प्राप्त हुआ था। अतः

विवेचन से जाहिर है कि वाडग्रल आरामी परमारीलान  
 (दादा) से इलेक्ट्रिक (पिता) को एवं बापुबाई  
 (दादी) से इलेक्ट्रिक (पिता) को undivided रूप  
 में प्राप्त हुई है।



5. माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने Shyam Narayan  
 Prasad v/s Krishna Prasad (2018) SCC 7 मामले में  
 आर्निक्विरिट फैला है कि "It is well  
 settled that the property inherited by a male  
 Hindu from his father, father's father and father's  
 father's father is an ancestral property."

माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने S.  
 Sampooram v/s C.K. Shanmugam 2022 मामले  
 में आर्निक्विरिट फैला है कि "fourth male  
 generation से undivided रूप में विरासत में  
 प्राप्त संपत्ति, उस हिन्दू की पितृ वंश संपत्ति होगी"

ख म	हुक्म या कार्यवाही या मय इनिशियल्स जज	नम्बर व तारीख अहकाम जो इस हुक्म की तालीम में जारी हुए
--------	---------------------------------------	--

Curdip Kaur v/s Ghumand Singh 1964  
 SCC online punj. 180 मामले में भारतीय फ़ौजदारी  
 एवं दंडविद्यालय उच्च न्यायालय ने अभिनियमित किया  
 है कि " Ancestral property was said to be  
 a property inherited from father, father's  
 father or great grand father."

Sarvamma v/s V.R. Virupakshiah 2010  
 SCC online KAR 136 मामले में भारतीय फ़ौजदारी  
 उच्च न्यायालय ने अभिनियमित किया है कि " Ancestral property is inherited up to four generations  
 of male lineage and must remain undivided  
 throughout the period of lineage."

4. उपरोक्त विवेकन के आधार पर  
 वादांतर भाग्यी केवल दो पीढ़ियों  
 ( परदादा से इमोदित तक ) तक ही विस्तृत  
 में आते हैं और इमोदित के जीवित  
 होने से पैतृक संवत्ती की परिभाषा में  
 cover नहीं होती है अतः प्रकरण प्रथम  
 रूपान्तर प्रार्थी के पक्ष में लाबित नहीं है।

5. सुविधा का संवत्ती :- वादांतर भाग्यी  
 पैतृक भाग्यी लाबित नहीं है। अप्रार्थी 1 ने  
 स्वयं कोर्ट के समक्ष उपस्थित होकर कथन  
 किया है कि प्रार्थी (का) व पति दोनों/स्व  
 ना तो कभी भरण पोषण किया है और ना  
 ही बीमारी का इलाज करा रहे है। दोनों



तारीख  
हुक्म

हुक्म या कार्यवाही या मय इनिशियल्स जज

नम्बर या  
अहकाम  
हुक्म की  
में जारी

पक्षों ने यह स्वीकार किया है कि प्राची (फ्र) एवं पति (मो) दोनों लम्बे समय से अप्राची 1 के साथ नहीं रह कर, अप्राची 1 के समुदाय में रहते हैं अप्राची प्राची अपने पिता अप्राची 1 की वहावतला में सेवा, इलाज, देखभाल नहीं करते अपनी मां के साथ गानापी के गांव/पाल वराडिया शेरपुर रहता है। अप्राची 1 की देखभाल व इलाज उनके भाई एवं बहिन ही करता प्रतीत होता है।

अतः बाहर होता है कि प्राची (फ्र) एवं प्राची की माता (पति) से अप्राची 1 के प्रति अपने पुत्र-धर्म व पति-धर्म (धर्मदा) का निर्वहन नहीं कर पा रहे और बिना कर्तव्य निर्वहन के आधिकार उत्पन्न होता या आधिकार मांगना अचित प्रतीत नहीं होता है।

अतः हस्तगत प्रकरण में सुविधा का अनुदान प्राची के पक्ष में लाबिल नहीं लेते हैं।

6. अपूरणीय झारि :- प्रकरण में प्राची को कोई अपूरणीय झारि कारित होता लाबिल नहीं होती है।

7. उपरोक्त विवेचन के आधार पर प्राची का अप्र फा पक्ष शर्त Act न. W. O. 33 R 182 के त्वा रिज किया जाता है। पक्षवाली पक्षवाली होकर नम्बर से काम होकर मुलवाड के साथ लाबिल हो। अप्राची 2 पालना सुनिश्चित करें।



उपरोक्त अधिकारी  
दिनांक 10/01/20